कलीसिया अध्याय 13

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज़ सुनने के लिए **प्रार्थना** करें।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **2 कुरिन्थियों 11-13**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (2कुरिन्थियों 11-13) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह के लिए तैयारी]* **(1) 2 कुरिन्थियों 6:14**

स्मरण वचनों की पाँचवी श्रृंखला (च) 'मसीही विवाह की तैयारी' से सम्बन्धित है। पाँच स्मरण पदों के शीर्षक निम्नलिखित हैं:

(1) दोनों पक्ष विश्वासी हों। 2 कुरिन्थियों 5:17

(2) जीवन के समान लक्ष्य हों। आमोस 3:3

(3) संयम। 1 थिस्लुनिकियों 4:3-5

(4) उचित समय। सभोपदेशक 8:5-6

(5) उचित प्राथमिकताएं। मत्ती 6:33

दो लोग साथ मिलकर ***मनन, स्मरण तथा पुनरावलोकन*** करें।

(1) दोनों पक्ष विश्वासी हों: 2कुरिन्थियों 6:14। अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति?

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[कलीसिया के पर्व]* **मसीही बपतिस्मा**

बाइबल के इन गद्यांशों को अवश्य पढ़ें।

परिचय। मसीही कलीसियाओं में मसीही बपतिस्मा एक विवादास्पद विषय है। यह अध्ययन विभिन्न मसीही सस्थाओं को बपतिस्मा सम्बन्धित बाइबल की विशुद्ध शिक्षाओं को समझने में मदद करता है ताकि वे इसकी तुलना अपनी शिक्षाओं से कर सकें। निर्णायक मूल्यांकन करते समय,एक मसीही मण्डली और उसके अगुवों का चुनाव करना ज़रूरी है कि वे मसीही बपतिस्में के किस पहलू पर वह स्वयं ज़ोर देने जा रहे हैं। इस अध्ययन में हम विशेष तौर पर सीखेगें कि बाइबल हमें मसीही बपतिस्में का क्या मतलब बताती है। परिशिष्ट 1 में हम विशेष रूप से सीखेगें कि बाइबल हमें बपतिस्में के बारे में क्या बताती है और क्या करने का सुझाव देती है।

"एक बपतिस्मा" शब्द(इफिसिया 4:5) बपतिस्में के अर्थ और उसकी वास्तविकता को बयान करता है न कि उसकी क्रिया विधि को। बपतिस्में का अर्थ नये नियम में स्पष्ट रूप से प्रगट किया गया है। हालांकि, बपतिस्में का एक विशेष समय या तरीका बाइबल में न तो बताया या निर्धारित किया गया है और न ही किसी तरीके की मनाही की गयी है।

क. ईसा पश्चात प्रथम शताब्दी के दौरान विद्यमान बपतिस्मे के पाँच विभिन्न प्रारूप

<u>बाइबल व प्रारम्भिक मसीही साहित्य में "बपतिस्में"(ग्रीक में : बैपटाईज़ो) शब्द का इस्तेमाल केवल आनुष्ठानिक या धार्मिक सन्दर्भ में किया गया है।</u>

- यहूदियों के जल संस्कार में (मरकुस 7:4; लूका 11:38)
- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बपतिस्मा में (मरकुस 1:8-9)
- मसीही बपतिस्मा में (पहल करने के संस्कार के रूप में)(प्रेरितों 2:41; 22:16; 1कुरिन्थियों 1:14-17)
- आत्मा द्वारा दिये जाने वाले किसी भी प्रकार के बपतिस्मे में (मरकुस 1:8)
- और क्लेशों की बहुतायत में(मरकुस 10:38) या लाल समुद्र से होकर गुज़रते समय(1 कुरिन्थियों 10:2)।

1.यहूदी मत स्वीकार करने वालों ने बपतिस्मा लिया (यूहन्ना 3:22-26; इब्रानियों 6:2)

- पुराने नियम(बेबीलोन में निर्वासन)और नये नियम(यीशु के प्रथम आगमन) के दौरान बहुत से गैर-यहूदी (अन्यजातियां)यहूदियों के एकेश्वरवाद अर्थात एक ही ईश्वर की उपासना करने के मत की ओर आकर्षित हो गये(यशायाह 44:6)। जिन गैर-यहूदियों ने बाइबल के परमेश्वर पर विश्वास किया उन्हें "परदेशी" "मुसाफिर" व "नये-विश्वासियों" या "नव-दीक्षित" के रूप में जाना जाता था (प्रेरितों 2:11)। ग्रीक भाषा में इस अर्थ है कि उन्होंने गैर यहूदी धारणाओं पर "जयवन्त होकर" यहूदी मत को स्वीकार कर लिया है।

लेकिन मसीही बपतिस्में का अर्थ किसी धर्म से "जय पाकर" दूसरे धर्म में जाना नहीं है।

(1) निर्वासन के बाद के दौर में कट्टर यहूदी तौर तरीके के साथ एकेश्वरवादी बनने का तरीका।

- यहूदी धर्म को अपनाने वाले लोगों पर उनके तौर तरीकों को अपनाने पर अत्यधिक ज़ोर दिया जाता था और वे इन निर्देशों को तीन प्रमुख विद्वानों से प्राप्त किया करते थे।
- उसक पुरुष का खतना किया जाता था, जो इस बात का प्रमाण था कि उसने अपने आपको व्यवस्था (यूहन्ना 7:22-23; गलातियों 5:3) के प्रति समर्पित कर दिया है और अब उसने अपनी पुरानी जीवन शैली को त्याग दिया है।
- उसे एक नया नाम दिया जाता था।
- वह शपथ खाते हुए स्वयं बपतिस्मा लेता था। (अर्थात एक मग की सहायता से अपने ऊपर पानी उण्डेलता था)
- ये तीनों विद्वान पुरुष या शास्त्री उस व्यक्ति के बपतिस्में के गवाह होते थे और जब वह नहा रहा होता था तो ये शास्त्रों से वचन पढ़ा करते थे।
- एक बपतिस्मा पाया हुआ नवदिक्षित यरूशलेम के एक मन्दिर में बलिदान चढ़ाया करता था।
- इन नवदिक्षितों की संख्या हमेशा बहुत छोटी रहा करती थी(मत्ती 23:15)।

(2) निर्वासन के बाद के दौर में यूहनानियों में एकेश्वरवादी बनने का तरीका

- ये यहूदी मत धारण करने वाले, यहूदियों के एकेश्वरवाद की ओर आकर्षित थे और यहूदी धर्म को अपनाना चाहते थे।
- उन्होंने भी स्नान करने के द्वारा बपतिस्मा ले लिया।
- उन्होंने पहले आराधनालय में धर्मशास्त्र में से पढ़े जाने वचनों और उपदेशों को सुना।
- उन्होंने यहूदी तौर तरीकों को पूरा करने का भरसक प्रयास किया। लेकिन उन पर खतना कराने, सबत के दिन को पवित्र मानने तथा सूअर का मांस न खाने पर विशेष ज़ोर दिया जाता था। उन्हें "यहूदी मत धारण करने वाले"(ग्रीक: प्रोसेलूटोई)(प्रेरितों 2:11; 6:5; 13:43),या "परमेश्वर के अराधक" और "भक्तगण" (ग्रीक:शिबोमिनोई)(प्रेरितों 13:43;16:14;18:7) कहा जाता था। ऐसे बहुत से लोग थे। बाद में उनमें से बहुत से लोग मसीही बन गये(प्रेरितों 13:43)।

2:18;प्रकाशितवाक्य 5:9)। केवल इसी तरीके से वह पवित्र और धर्मी परमेश्वर की मांगों को पूरा कर सकता था,क्योंकि सारी बुराईयों और पापों को दण्ड मिलना जरूरी है(अर्थात पापों का बलिदान बनकर)। इस कृत्य के द्वारा न केवल यीशु आगे मार्गबनाने वाले के रूप में यूहन्ना की सेवाकाई की पुष्टि की(यशायाह 40:3),वरन उसकी अपनी सेवाकाई को प्रगट किया: कि वह लोगों के पापों के लिए अपनी जान देने के लिए आया था।

<u>2. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने पानी से बपतिस्मा दिया(मरकुस 1:8 ; प्रेरितों 13:24; 19:2-4)</u>

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला यीशु मसीह के आगे आगे एक संदेश वाहक के रूप में था। उसने यीशु मसीह के लिए रास्ता तैयार किया जिसे "प्रभु परमेश्वर " के नाम से जाना जाता है(यशायाह 40.:3; मलाकी 3:1-2;मत्ती 17:10-14; यूहन्ना 3:28)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बपतिस्में ने पुराने नियम में पानी से बपतिस्मा दिये जाने वाले अनष्ठानों तथा यहूदी मत को धारण करने वालों तथा पानी से बपतिस्मा दिये जाने (शुद्धिकरण अनुष्ठान) तथा पुराने नियम व नये नियम में अपने आप बपतिस्मा लेने से लेकर नये नियम में मसीहियों द्वारों दूसरों के हाथ से पानी का बपतिस्मा लिये जाने की रीति के बीच एक सेतू को खड़ा कर दिया।

---

1. इसका प्रयोग साहित्यिक सन्दर्भ में नहीं किया गया है! नये नियम का ग्रीक-इंगलिश शब्दकोश तथा अन्य पौराणिक मसीही साहित्य से लिया गया, 1957।

(1) अति शुद्धता की अपेक्षा।

निर्वासन के समय से (अर्थात यहेजकेल भविष्यद्वक्ता के समय से)यहूदी लोगों की महान शुद्धिकरण की अपेक्षा कर रहे थे जिसके बाद पवित्र आत्मा का उतरना तय था (यहेजकेल 36:25-28;37:23)। फरीसियों के अनुसार केवल मसीह या उसका विशेष राजदूत: भविष्यद्वक्ता (जैसे मूसा) (व्यवस्थाविवरण 18:18-19)या भविष्यद्वक्ता एलिय्याह (मलाकी 4:5-6) को इस तरह के शुद्धिकरण को कार्यान्वित करने की अनुमति थी, जिसका अर्थ था कि केवल वह ही बपतिस्मा दे सकता है।(यूहन्ना 1:1-19-21)।

(2) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा दिया जाने वाला बपतिस्मा एक तैयारी के समान था।

परमेश्वर ने यीशु मसीह के लिए रास्ता तैयार करने की मनसा से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को पानी का बपतिस्मा देने के लिए भेजा। लेकिन यीशु मसीह लोगों को आत्मा का बपतिस्मा देगा।

"यूहन्ना का बपतिस्मा" (प्रेरितों 19:3)बपतिस्मा देने वाला, यहूदी मत घारण करने वाले लोगों से जुड़ा हुआ था। उसे लोगों को मन फिराने के लिए पुकारना या बुलाना ज़रूरी था, क्योंकि जिस मसीह की प्रतिज्ञा की गयी थी वह आने वाला था (लूका 3:3-14)। और जिन लोगों ने मन फिराया उन्हें उसने उनके मन फिराव (प्रेरितों 13:24)और पापों की क्षमा(प्रेरितों 19:5) के चिन्ह के रूप में पानी का बपतिस्मा दिया (मरकुस 1:4)। यूहन्ना द्वारा दिये जाने वाले बपतिस्मा का अर्थ था कि उनका उस यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से आवश्यक व घनिष्ठ सम्बन्ध बन रहा था जिसने यीशु मसीह को स्वीकार करके तथा उस पर विश्वास करके,यहूदियों के लिए मसीह अर्थात यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध बनाने हेतू रास्ता तैयार किया था (प्रेरितों 19:5)। इसीलिए इस बपतिस्मा को "मन फिराव का बपतिस्मा भी कहा जाता है" (प्रेरितों 13:24; 19:4)। अन्त में यूहन्ना ने इस बात की घोषणा कर ही दी कि मसीह उन्हें आत्मा से बपतिस्मा देगा (मरकुस 1:8;यूहन्ना 1:33)!

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का बपतिस्मा शुद्धिकरण के अनुष्ठान (यूहन्ना 3:25-26) तथा पुराने नियम में "बपतिस्मों की रीतियों" (ग्रीक: बपतिस्मों)(इब्रानियों 6:2) से भी जुड़ा हुआ था। पुराने नियम के दौरान विश्वासियों ने केवल *पानी उण्डेले जाने व पानी द्वारा धोये जाने के* "प्रतिबिम्ब" का एक चिन्ह व अनुष्ठान के रूप में ही प्राप्त किया था। जबकि पुराने नियम में पाया जाने वाला यह चिन्ह नये नियम में पायी जाने वाली उस वास्तविकता की ओर संकेत करता है जिसमें नये नियम में भीतरी शुद्धि व पापों की क्षमा शामिल है जो उन्हें यीशु मसीह पर विश्वास करने पर प्राप्त होगी (जब उन्हें आत्मा द्वारा बपतिस्मा प्राप्त होगा)। उदाहरण के लिए यीशु मसीह के प्रथम चेलों, अर्थात यूहन्ना और इन्द्रियास को(यूहन्ना 1:35-31) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा पानी से बपतिस्मा दिया गया था। बाद में जब वे यीशु मसीह के साथ रहने लगे तो उन्होंने दोबारा कोई बपतिस्मा नहीं लिया क्योंकि मसीही बपतिस्मे का भी सांकेतिक मतलब वही था जो यूहन्ना के बपतिस्मे का था (मरकुस 1:4), अर्थात लोगों के पापों का धोया जाना(प्रेरितों 2:8;22:16,) हालांकि बाद में उन्होंने पवित्र आत्म का बपतिस्मा पाया (यूहन्ना 7:37-39; प्रेरितों 1:5;2:1-4)!

(3) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा यीशु मसीह को पानी का बपतिस्मा दिया जाना अपने आप में एक अनोखी घटना थी जिसका एक विशेष अभिप्राय है।

यीशु ने "धार्मिकता को पूरा करने के लिए" यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को उसे बपतिस्मा देने के लिए प्रोत्साहित किया(मत्ती 3:14-15), जिसका अर्थ धार्मिकता के प्रति परमेश्वर की मांग को पूरा करना है। यीशु को पानी का बपतिस्मा इसलिए नहीं दिया गया था, क्योंकि वह एक पापी था और उसे अपने पापों से क्षमा की आवश्यकता थी, मगर इसलिए क्योंकि वह क्रूस के कष्टों का बपतिस्मा लेने पर था(मरकुस 10:38)। मसीह इसी लिए आया कि वह उस पर विश्वास करने वाले लोगों के पापों को अपने ऊपर उठा ले(यशायाह 53: 5-6;यूहन्ना 1:29; 10:11; 2 कुरिन्थियों 5:21; 1 पतरस 2:24; 2:18;प्रकाशितवाक्य 5:9)। केवल इसी तरीके से वह पवित्र और धर्मी परमेश्वर की मांगों को पूरा कर सकता था,क्योंकि सारी बुराईयों और पापों को दण्ड मिलना जरूरी है(अर्थात पापों का बलिदान बनकर)। इस कृत्य के द्वारा न केवल यीशु मसीह ने अपने आगे मार्गबनाने वाले के रूप में यूहन्ना की सेवाकाई की पुष्टि की(यशायाह 40:3),वरन उसकी अपनी सेवाकाई को प्रगट किया: कि वह लोगों के पापों के लिए अपनी जान देने के लिए आया था।

3. यीशु मसीह आत्मा और आग से बपतिस्मा देता है(मत्ती 3:11-12)

यह वाक्य "आत्मा से बपतिस्मा" नये नियम में केवल सात बार ही नज़र आता है: चार बार एक सक्रिय क्रिया के रूप में जहां यीशु बपतिस्मा देने वाला है और तीन बार निष्क्रिय क्रिया के रूप में जहां विश्वासी उसके द्वारा बपतिस्मा प्राप्त करते

हैं; छः बार इसमें "en" पूर्वसर्ग का इस्तेमाल किया गया जो उसे एक उपाय या उपकरण के रूप दिखाता है(मत्ती 3:11;लूका 3:16;यूहन्ना 1:33; प्रेरितों 1:5;11:16;1 कुरिन्थियों 12:13) और एक बार उसे तीसरे व्यक्ति के रूप में प्रदर्शित किया गया है(कारक के रूप में, जो उसे एक उपाय या उपकरण के रूप दिखाता है)(मरकुस 1:8)। इसलिए हमें सातों बार इस शब्द का अनुवाद करना चाहिए:"पवित्र आत्मा से बपतिस्मा"।[4]

नामधारी मसीही नया जन्म पाये हुए विश्वासी नहीं होते(उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त नहीं किया है)इसका अर्थ हुआ कि जो कोई जन यीशु पर विश्वास करता है वह पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाया हुआ है(अर्थात उसने नया जन्म अर्थात उद्धार प्राप्त कर लिया है), लेकिन जो कोई अविश्वासी की दशा में बना रहता है "वह आग का बपतिस्मा प्राप्त करेगा (मत्ती 3:12) (अर्थात वह उदासीन बना रहता है)(रोमियों 8:1-2; यूहन्ना 3:18,36; 5:24-29)। इसके अलावा विश्वास और अविश्वास के बीच तीसरी सम्भावना है ही नहीं!

हालांकि पुराने नियम में शुद्धिकरण के सन्दर्भ में पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा की प्रतिज्ञा पहले ही की जा चुकी थी (यहेजकेल 36:25-28), लेकिन इसका कोई सम्बन्ध यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के साथ में नहीं है (प्रेरितों 19:3-5),लेकिन इसका सम्बन्ध यीशु मसीह द्वारा किये गये उद्धार के सम्पूर्ण कार्य से है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का बपतिस्मा केवल *प्रत्यक्ष* पानी के द्वारा दिया जाता था। लेकिन मसीही बपतिस्मा वास्तव में एक अप्रत्यक्ष आत्मा का बपतिस्मा है(मरकुस 1:8)। मसीही बपतिस्मा में प्रत्यक्ष पानी का बपतिस्मा, आत्मा के अप्रत्यक्ष आत्मा के बपतिस्मा का चिन्ह व प्रमाण है(प्रेरितों 2:37-38; प्रेरितों 10:47-48; यूहन्ना 3:5)!

हालांकि आत्मा का बपतिस्मा, जिसका अर्थ "पापों का धोया जाना या पापों की क्षमा होती है" यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले बपतिस्मा के साथ जुड़ा हुआ है(मरकुस 1:4),लेकिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा उसके
पूरे अर्थ को समझते हुए अर्थात मसीह का जीवन, मृत्यु और यीशु मसीह के पुनरूत्थान (रोमियों 6:3-4) और पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने को समझते हुए लिया जाता है, जो वास्तव में यीशु मसीह का आत्मा है(रोमियों 8:9-10)-उद्धार के इतिहास की सारी घटनाएं यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बाद घटीं। सम्पूर्ण नये नियम के काल में पवित्र आत्मा ने यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोगों के जीवन में यीशु मसीह द्वारा किये गये उद्धार के सम्पूर्ण कार्य का ही इस्तेमाल किया है(1पतरस 1:2)।

मसीही बपतिस्मा पुराने जीवन के अन्त और नये जीवन के प्रारम्भ को प्रगट करता है। यह नया जन्म विश्वासी के पूरी तरह नवीनीकरण की शुरूआत है। पानी के द्वारा प्रत्यक्ष बपतिस्मा आत्मा द्वारा अप्रत्यक्ष बपतिस्मे का प्रतीक है-जो यह प्रमाणित करता है कि वह व्यक्ति वास्तव में विश्वासी बन गया है [5](प्रेरितों 10:47-48)।

4.यीशु और उसके चेलों ने कष्टों का बपतिस्मा लिया (मरकुस 10:38-39)।

मसीही लोग भी उसी " कष्टों के बपतिस्मा" द्वारा बपतिस्मा पाएगें जिनमें होकर यीशु मसीह का बपतिस्मा हुआ था। यहां पर नियमित वर्तमान काल पर ध्यान दें: कष्ट तो मसीहियों पर बार बार आते हैं। जबकि मसीही लोगों का पानी के साथ केवल एक ही बार बपतिस्मा होता है लेकिन उन पर लगातार कष्टों और सतावों की बौछार होती ही रहती है। क्रूस पर कष्टों को सहने के द्वारा यीशु मसीह ने उद्धार के निमित्त अपने काम को पूरा किया था: अत: विश्वासियों के पापों का पूरी तरह प्रायश्चित किया जा चुका है। "वह पूरा हो चुका है!"(यूहन्ना 19:30)।

लेकिन यीशु मसीह, मसीहियों के इतिहास के पहले दिन से लेकर आज तक जब भी उन पर सताव या दबाव पड़ता है, मसीहियों के साथ साथ दु:ख सहते हैं। मसीहियों "मसीह के क्लेशों की घटी को अपनी देह में उठा लें"(लूका 9:23;2 कुरिन्थियों 1:5; कुलुस्सियों 1:24, 2 तीमुथीयुस 3:12; 1 पतरस 4:13)। मसीहियों द्वारा सहे जाने वाले कष्टों से उनके पापों के प्रायश्चित में कोई योगदान नहीं होता और इनका अन्त केवल मसीह के दूसरे आगमन पर ही जाकर होगा।

5.मसीही लोग पानी के द्वारा बपतिस्मा देते हैं (मत्ती 28:19)।

(1) मसीहियों का पानी द्वारा बपतिस्मा दिया जाना एक आज्ञा है।

यीशु मसीही ने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के बाद पानी के बपतिस्में का निर्माण किया और उसे सारी जातियों को चेला बनाने के उसके आदेश के साथ जोड़ दिया (मत्ती 28:19)। मसीहियों को नये विश्वासियों को पानी का बपतिस्मा देना चाहिए और उसी प्रकार नये विश्वासियों ने भी पानी के द्वारा बपतिस्मा दिये जाने की अनुमति प्रदान करनी चाहिए। यह एक आज्ञा है अत: मसीहियों के लिए इसके अलावा कोई विकल्प बाकि नहीं है।

(2) पानी द्वारा मसीहियों का बपतिस्मा एक निर्णायक घटना है।

मसीहियों द्वारा लिया जाने वाला बपतिस्मा नये नियम में आत्मा के बपतिस्में से और पुराने नियम में खतना से जुड़ा हुआ है।

एक तरफ तो मसीहियों का बपतिस्मा, नये नियम में आत्मा के बपतिस्मा से जुड़ा हुआ है(यूहन्ना 3:5;प्रेरितों 2:38-39;प्रेरितों 10:47-48)। लेकिन मसीहियों का पानी का बपतिस्मा, यूहन्ना के बपतिस्में से बढ़कर बातों का प्रतीक है। यह केवल पश्चाताप और पापों से शुद्ध होने का ही चिन्ह नहीं है, यह आत्मा में बपतिस्मे को भी प्रगट करता है, जिसका अर्थ मसीह के साथ एक हो जाना, मसीह द्वारा किये गये उद्धार के काम में सहभागी हो जाने, नया जन्म व उसकी देह (कलीसिया)का एक भाग बन जाना, तथा उसके राज्य के लोग व उसकी निज प्रजा बन जाना है।

दूसरी ओर मसीही बपतिस्मा पुराने नियम में शारीरिक खतने से भी जुड़ा हुआ है (कुलुस्सियों 2:11-13)। मसीहियों का पानी का बपतिस्मा(प्रेरितों 2:38)एक खतने के समान ही है (रोमियों 4:11-12) जो उस धार्मिकता का चिन्ह व प्रमाण है जो हमें विश्वास के द्वारा प्राप्त होती है। जबकि शारीरिक खतना पुरानी वाचा के काल का एक अस्थायी चिन्ह और प्रमाण था(उत्पत्ति 17:9-14;गलातियों 5:2-4;6:12-15),पानी का बपतिस्मा नयी वाचा के काल का एक स्थायी चिन्ह और प्रमाण है(मत्ती 28:19; गलातियों 3:26-29)।

(3) मसीहियों का पानी का बपतिस्मा एक चिन्ह व एक प्रमाण है (रोमियों 4:10-11)

मसीही बपतिस्मा निम्नलिखित बातों को चिन्हित व प्रमाणित करता है:

- कि विश्वासी पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा पा चुका है(मरकुस 1:8) अर्थात उसने नया जन्म पा लिया है।
- कि विश्वासियों के सारे पाप धुल चुके हैं (प्रेरितों 2:38; 22:16)अर्थात उसने क्षमा पा ली है और अब वह परमेश्वर की निगाहों में धर्मी ठहर चुका है।
- कि विश्वासी मसीह के साथ एक हो चुका है(गलातियों 3:27)और मसीह द्वारा किये गये उद्धार के काम को साझा करता है।(रोमियों 6:1-7)
- कि विश्वासी को हमेशा के लिए अन्धकार(शैतान) के राज्य से बाहर निकालकर यीशु मसीह के राज्य में प्रवेश कराया गया है(कुलुस्सियों 1:13) वह मसीह की देह अर्थात कलीसिया का एक अंग है (1कुरिन्थियों 12:13) और परमेश्वर की निज प्रजा का एक वारिस बन गया है(गलातियों 3:26-29; 1 पतरस 2:9)।

ख.आत्मा के द्वारा बपतिस्मा

एक ही बपतिस्मा है(इफिसियों 4:5)

1. मसीही बपतिस्मा वास्तव में पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाना है।

यीशु मसीह कलीसिया का प्रधान,शिरोमणी और चरवाहा (पास्टर) है(इफिसियों 1:22;1पतरस 2:25;5:4)

केवल यीशु मसीह ही आत्मा का बपतिस्मा देता है(मत्ती 3:11; मरकुस 1:8; लूका 3:16-17)। यीशु मसीह के चेले पानी के द्वारा बपतिस्मा देते हैं(मत्ती 28:19)।

जब हम बाइबल में "बपतिस्मा" (ग्रीक : बैपटाईज़ो) पढ़ते हैं, तो हमारे लिए आत्मा में बपतिस्मा (जो काम केवल परमेश्वर करता है) और पानी के बपतिस्मा (जो विश्वासी देते हैं)के अन्तर को स्पष्टता से समझ लेना बहुत ज़रूरी है।

2.बाइबल की शिक्षाओं में आत्मा द्वारा बपतिस्मा दिया जाना।

लोगों को आत्मा में बपतिस्मा कब प्राप्त होता है?

बाइबल हमें शिक्षा देती है कि परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ काम और मनुष्य का ज़िम्मेदारी से भरा कार्य क्या होता है;

(1) परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ कार्य

समय के निर्धारित किये जाने से पहले ही परमेश्वर ने विश्वासियों को यीशु मसीह में अनुग्रह प्रदान करने की योजना बना ली थी(2तीमुथीयुस 1:9-11)। *सम्पूर्ण इतिहास काल में* अर्थात अपने प्रथम आगमन पर उसने अपने पवित्र आत्मा को उण्डेल दिया(यूहन्ना 7:37-39;यूहन्ना 14:17-18)। *सम्पूर्ण इतिहास काल में* वह सुसमाचार के माध्यम से लोगों को अपने पास बुलाता रहा है। *समपूर्ण इतिहास काल में* वह आत्मा के शुद्ध करने वाले कामों तथा सत्य में उनके विश्वास के द्वारा अपने लोगों को बचाता आया है(2 थिस्लुनिकियों 2:13-13)। इसी कारण मसीही के अनुयायियों को सारे संसार भर में सुसमाचार की घोषण करनी चाहिए(मरकुस 16:15)।

(2) मनुष्य की ज़िम्मेदारी

एक व्यक्ति को सुसमाचार सुनना, उसे समझना, स्वीकार करना (पश्चाताप करके विश्वास करना), उसमें बने रहना ओर धीरज के साथ फल लाना चाहिए(लूका 8:4-15)। समय रहते जब कोई व्यकि सुसमाचार को सुनता है तो वह विश्वास करने लगता है(रोमियों 10:17; प्रेरितों 2: 36-37)। विश्वास करना मनुष्य की ज़िम्मेदारी है (मरकुस 1:14-15; यूहन्ना 1:11-13;प्रेरितों 3:18)। फिर एक सच्चा विश्वास परमेश्वर की ओर से दिया जाने वाला वरदान है (जो यह गुण प्रदान करता है)यह कभी भी मनुष्य का काम नहीं हो सकता(प्रेरितों 13:48; 16:14; 18:27, इफिसियों 2:8; फिलिप्पियों 1:29, 2

पतरस 1:1)। यदि परमेश्वर ने किसी व्यक्ति को सुसमाचार प्रचार करने के लिए न भेजा होता तो वह व्यक्ति कभी भी विश्वास में नहीं आ सकता था। (रोमियों 10:13-17)।

(3) विश्वास करने का परिणाम

जब कोई व्यक्ति सुसमाचार पर विश्वास करता है,

- वह पवित्र आत्मा पाता है(प्रेरितों 15:7-9; गलातियों 3:2)

इसी सच्चाई को दूसरे तरीकों से कहना:

- वह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा चुका है(प्रेरितों 11:14-18; 15:7-11)
- उस पर पवित्र आत्मा की मुहर लगी हुई है(2 कुरिन्थियों 1:22;इफिसियों 1:13; 4:30)
- वह पवित्र आत्मा का अभिषेक प्राप्त है(2 कुरिन्थियों 1:21; 1 यूहन्ना 2:20)

लेकिन पवित्र आत्मा भी परमेश्वर की ओर से एक वरदान है(प्रेरितों 2:38; 10:45; 11:17;15:8)और परमेश्वर द्वारा दी गयी पहली किश्त है जो आने वाले पल (मिरास) का जामिन है(2 कुरिन्थियों 1:22; 5:5; इफिसियों 1:11-14)।

जो व्यक्ति अपने जीवन में पवित्र आत्मा,अर्थात मसीह का आत्मा, या मसीह को अपने हृदय में स्वीकार करता है(रोमियों 8:9-10),

- वह नया जन्म पाया हुआ व्यक्ति है।

इसी सच्चाई को अगर दूसरे तरीकों से कहा जाए तो:

- वह परमेश्वर की ओर से जन्मा, पुन: जन्मा या आत्मा से जन्म पाया हुआ है(यूहन्ना 1:12-13; 3:3-8)
- उसने उद्धार पा लिया है, अर्थात परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया है और अब वह अनन्त जीवन में उसकी अगुवाई कर रहा है(प्रेरितों 11:14.18)
- उसने पवित्र आत्मा प्राप्त कर लिया है, विश्वास के द्वारा उसका हृदय शुद्ध है और उसने छुटकारा पा लिया है। (प्रेरितों 15:8-10; 2 थिस्लुनिकियों 2:13-14, 1पतरस 1:1-2)
- वह नया जन्म के स्नान से उद्धारअ और पवित्र आत्मा द्वारा नया मन पा चुका है, जिसे परमेश्वर ने बड़ी उदारता के साथ हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु में होकर हम पर उण्डेला है(तीतुस 3:5-6)।
- प्रेरित पॉलुस विशेष तौर पर पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने की शिक्षा देता है(रोमियों 6:1-8;1 कुरिन्थियों 12:12-13; गलातियों 3:26-29;इफिसियों 4:5; कुलुस्सियों 2:11-13)।

3.बाइबल आधारित उद्धार के इतिहास में आत्मा के द्वारा बपतिस्मा पाना।

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने की घटना पहली बार इतिहास में पिन्तेकुस्त के दिन सामने आयी(प्रेरितों 1:5)। यूहन्ना 7:37-39 में जो प्रतिज्ञा की गयी थी वह उस दिन पूरा हो गया!

बाइबल में परमेश्वर द्वारा किये उद्धार के इतिहास में केवल दो ही घटनाएं दर्ज हैं जिसमें लोगो ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त किया और कुछ दिनों बाद उन्होंने विश्वास किया और उन्होंने पानी का बपतिस्मा लिया। क्यों? क्योंकि दोनों ही घटनाएं कलीसिया के प्रति परमेश्वर की उद्धार की योजना के बारे में बताती हैं:

- पहली बार इसलिए हुआ था क्योंकि यीशु मसीह तब तक महिमा में नहीं पहुंचे थे(अर्थात उसका क्रूसीकरण,पुनरूत्थान, उठाया जाना और सिंहासन पर विराजमान होना)(यूहन्ना 7:37-39)।
- और दूसरी बार तब हुआ जब यीशु मसीह ने राज्य की कुँजियों को केवल उसके प्रेरितों के हाथ में सौंप दिया (मत्ती 16:18-19)।

उद्धार के इतिहास में ये दोनों ही घटनाएं अनोखी हैं। ये घटनाएं उद्धार के इतिहास का बखान करती हैं, उस स्थान या समय के बारे में शिक्षा नहीं देती जब पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा होना चाहिए। अत:,ये दो बाइबल अनुच्छेदों का इस्तेमाल इस बात को साबित करने के लिए नहीं किया जा सकता कि पवित्र आत्मा में बपतिस्मा प्राप्त करना "एक दूसरी आशीष है" और जो व्यक्ति यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले हैं उन्हें पवित्र आत्मा के अनुभव से होकर गुज़रना ज़रूरी है।

(1) प्रथम यहूदी मसीही।

प्रथम यहूदी मसीहियों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने से वर्षों पहले विश्वास किया और पानी का बपतिस्मा लिया। इन 120 यहूदी चेलों को (प्रेरितों 1:15) तब तक पवित्र आत्मा के उन पर उतरने का इन्तज़ार करना था जब तक मसीह कलीसिया के सिर(इफिसियों 1:22) अर्थात प्रधान के रूप में महिमा प्राप्त ने कर ले (अर्थात यीशु मसीह के स्वर्गारोहण व उसके सिंहासन पर विराजमान होने तक)(यूहन्ना 7:37-39;16:7-11)। मसीह के महिमा में पहुँचने के पश्चात उन्होनें

निश्चय ही पवित्र आत्मा का वरदान पाया(प्रेरितों 2:1-21)। पिन्तेकुस्त के बाद विश्वासियों को पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के लिए इन्तज़ार करने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मसीह ने अपनी महिमा को पहले ही प्राप्त कर लिया है। बाद में हम देखते हैं कि ठीक उसी दिन विश्वास करने वाले तीन हज़ार लोगों ने भी पवित्र आत्मा प्राप्त किया(प्रेरितों 2:36-39)

(2) प्रथम सामरी मसीही (आधे यहूदी)

प्रथम सामरी मसीही अर्थात आधे यहूदी मसीहियों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने से पहले पानी का बपतिस्मा ले लिया था। उन्हें वास्तव में पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के लिए तब तक इन्तज़ार करना था जब तक कि मसीह के प्रेरित जिन्हें कलीसिया की नींव का पत्थर माना जाता है(इफिसियों 2:20) वे अन्यजातियों के लिए परमेश्वर के राज्य या कलीसिया का द्वार नहीं खोल देते(मत्ती 16:18-19; 18:18;यूहन्ना 20:21-23)। जब प्रेरित पतरस और यूहन्ना ने उनके लिए प्रार्थना की तो उन्होंने भी पवित्र आत्मा पाया अर्थात पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया(प्रेरितों 8:4-17)।

यीशु ने इस संसार में अपने बारह प्रेरितों के द्वारा ही कलीसिया की बुनियाद को रखा। जिसमें विभिन्न पृष्ठभूमियों से आये हुए लोग थे: यहूदी (प्रेरितों 1-8);आधा यहूदी (सामरी)(प्रेरितों 9-12) तथा गैर यहूदी(अन्यजातियाँ)(प्रेरितों 13:28) (प्रेरितों 1:8)। बुनियाद रखे जाने के बाद से लोग उसी क्षण पवित्र आत्मा को बपतिस्मा पाने लगे जिस क्षण उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास किया। (इफिसियों 1:13)।

(3) प्रथम गैर यहूदी मसीही।

प्रथम गैर यहूदी मसीहियों ने विश्वास करते ही पवित्र आत्मा को बपतिस्मा प्राप्त किया(प्रेरितों 10:47-48; 11:14-18; 15:7-11), क्योंकि यीशु अपनी महिमा तक पहुंच चुके थे और प्रेरित पतरस उनके लिए परमेश्वर के राज्य का द्वार खोलने के लिए वहां मौजूद था।

4. वर्तमान में आत्मा द्वारा बपतिस्मा पाना।

प्रथम यहूदियों विश्वासियों पर ऐतिहासिक रूप में पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद,प्रथम सामरी विश्वासी और प्रथम गैर यहूदी विश्वासी(प्रेरितों 1:8), तथा लोगों ने यीशु मसीह पर विश्वास करते ही पवित्र आत्मा बपतिस्मा प्राप्त कर लिया था(यूहन्ना 1:12-13;प्रेरितों 5:32;19:2;गलातियों 3:2; इफिसियों 1:13)। "पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाना" "आत्मा में नया जन्म प्राप्त करने का एक पर्यायवाची वाक्य है (यूहन्ना 3:3-8;तीतुस 3:4-8)। पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाने पर विश्वासी पूरी तरह से यीशु मसीह के साथ एक हो जाता है और उसे मसीह द्वारा किये गये उद्धार के निमित्त किये गये कामों को साझीदार बना देता है। पौलुस कहता है,"और तुम में से जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया है,उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। (गलातियों 3:27)

5. पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाना तथा पवित्र आत्मा से भरे जाना।

इफिसियों 1:13 हमें बताता है कि "पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा पाना" जीवन में सिर्फ एक बार और हमेशा के लिए होने वाली घटना है, जिससे मसीहियों के नये जीवन की शुरूआत होती है(जैसे सामान्य भूतकाल किसी एक घटना की ओर संकेत करता है)। फिर भी,इफिसियों 5: 18 हमें शिक्षा देता है कि "पवित्र आत्मा से भरा जाना" एक अनुभव जिसे मसीहियों के जीवन में बार बार होने की ज़रूरत है(वर्तमान काल लगातार होने वाले या सदा के लिए जरूरी घटना को प्रदर्शित करता है)।

जब कोई व्यक्ति पवित्र आत्मा में बपतिस्मा प्राप्त करता है तो आत्मा उसके शरीर और जीवन में सदा के लिए वास करने हेतू पहली बार उतरता है और वह विश्वासी यीशु मसीह द्वारा उद्धार के निमित्त किये जाने वाले कामों पूरी तरह से भागीदार बन जाता है(रोमियों 6:1-7)

लेकिन, जब कोई विश्वासी आत्मा से भरता है, तो उस समय में पवित्र आत्मा उसमें पहले से विद्यमान होता है। उस विशेष क्षण में विश्वासी को अधिक पवित्र आत्मा प्राप्त नहीं होता वरन पवित्र आत्मा उस विश्वासी के जीवन के हर एक पहलू पर अपना कब्ज़ा कर लेता है(इफिसियों 5:19-21)।

6. पवित्र आत्मा में बपतिस्मा तथा पानी से बपतिस्मा प्राप्त करना।

पवित्र आत्मा तथा पानी के बपतिस्मा दोनों में ही एक ही शब्द " बपतिस्मा " (ग्रीक: बैपटाइज़ो) का इस्तेमाल किया गया है। पवित्र आत्मा में बपतिस्मा प्राप्त करना परमेश्वर के अदृश्य वास्तविकता और पानी में बपतिस्मा प्राप्त करना एक सदृश्य चिन्ह होता है(जो किसी दूसरे मसीही व्यक्ति के द्वारा दिया जाता है) जिसे स्वयं परमेश्वर इस बात को प्रमाणित करने के लिए प्रदान करते हैं, कि उसे वास्तव में आत्मा से बपतिस्मा प्रदान किया गया है(प्रेरितों 2:37-41; 10:47-48)।

जब लोग पानी के बपतिस्मा को पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से अलग करके देखते हैं तो वह शिक्षा बाइबल विरोधी होती है। इस दशा में जो मनुष्य जो कुछ बपतिस्में के दौरान करता है वह उस कार्य का स्थान ले लेता है जो मसीह आत्मा

द्वारा दिये जाने वाले बपतिस्मा में करता है। उदाहरण के लिए, कई मसीही लोग शिक्षा देते हैं कि कलीसिया के पुरनियों या अधिकारियों के द्वारा दिये जाने वाले पानी के बपतिस्में द्वारा उन विश्वासियों के जीवन में परमेश्वर का अनुग्रह आता है और वह नया जन्म प्राप्त करते हैं। इस तरह देखा जाए तो नये जन्म का सारा दारोमदार मनुष्य के हाथों में चला जाता है।

और जब लोग आत्मा के बपतिस्मा को पानी के बपतिस्मे से अलग करके देखते हैं तो वह शिक्षा बाइबल विरोधी होती है। इस दशा में आत्मा के द्वारा बपतिस्मा नये जन्म के बजाय कुछ और ही बन जाता है। उदारहण के लिए: कई बार मसीही इस प्रकार शिक्षा देते हैं कि आत्मा में जन्म लेना "दूसरी आशीष है" अर्थात जब कोई जन आत्मा में नया जन्म प्राप्त करता है तो उसे एक अदभुत शक्ति और आत्मिक वरदान प्राप्त होते हैं(विशेष कर के अन्यान्य भाषा का वरदान)। इस दशा में आत्मा के बपतिस्मे का अर्थ नया जन्म नहीं ठहरता।

ग.मसीही बपतिस्मा का अर्थ

सदैव प्रश्न पूछें: क्या "बपतिस्मा" शब्द का अर्थ आत्मा के बपतिस्मे के बारे में बताता है या पानी के बपतिस्मे के बारे में? उद्धार के निमित्त मसीह द्वारा किये गये सम्पूर्ण कार्य को ध्यान में रखते हुए मसीही बपतिस्मा का सही अर्थ उद्धार पाने के लिए "आत्मा में बपतिस्मा पाना है"(प्रेरितों 11:14-18)! "पानी का बपतिस्मा" पवित्र आत्मा से बपतिस्मा प्राप्त करने का प्रतीक व पुष्टिकरण है। (प्रेरितों 10:47-48)।

यदि हम पुराने वाचा के साथ नयी वाचा को लगातार आगे जोड़ दें, तो पुराने नियम में शारीरिक तौर पर किया गया खतना(रोमियों 4:3,11-12) तथा नये नियम में किया गया पानी का बपतिस्मा(मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38-39; 22-16)"विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाने" तथा "उद्धार" का प्रतीक व पुष्टी है।

1. मत्ती 28:19 पानी के बपतिस्में के बारे में बताते है।

(1) वास्तव में क्या होना चाहिए?

ससांर भरे में जितने लोग यीशु मसीह के शिष्य बनते अर्थात उसकी शिक्षाओं का अपने जीवन में पालन करने लग जाते हैं उन्हें किसी दूसरे मसीही जन के द्वारा त्रिएक परमेश्वर के एक नाम में बपतिस्मा लेना चाहिए।

(2) इसका अर्थ क्या है?

"के नाम में" वाक्य का अर्थ "उस नाम के अधिकार में",क्योंकि यह अधिकार तो यीशु के आदेश में हमें पहले ही दे दिया गया है, वरन वाक्य, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा " के नाम में "(ग्रीक :ऐस टो ओनोमा) प्रगट करता है कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के द्वारा एक विश्वासी में इन तीनों नामों को धारित करने वाली शक्ति को संगठित कर दिया गया है(जो बाइबल का परमेश्वर है)। मत्ती 28:19 दर्शाता है कि पानी से बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति इस बात का प्रमाण है कि वह पूरी तरह से त्रिएक परमेश्वर के प्रति समर्पित हो चुका है। पानी का बपतिस्मा देते समय उस नाम को बोले जाने की जरूरत नहीं है, लेकिन उसको उच्चारित किया जा सकता है। जब कोई मसीही व्यक्ति किसी विश्वासी को पानी का बपतिस्मा देता है उस समय वह मसीह उस व्यक्ति का मसीह के साथ सम्बन्ध बनाने का प्रयास नहीं करता, लेकिन जब यीशु उसे पवित्र आत्मा के द्वारा बपतिस्मा प्रदान करता है तो विश्वासी का रिश्ता मसीह के साथ बनता है। वह पानी का बपतिस्मा इस बात के प्रतीक व प्रमाण के तौर पर लेता है कि वह पहले ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा चुका है। विश्वासी में पवित्र आत्मा, त्रिएक परमेश्वर के प्रतिनिधी के रूप में वास करता है(रोमियों8:9-10; 1 कुरिन्थियों 3:16)।

परमेश्वर जगत की सीमाओं से सीमित नहीं है। उसका आलौकिक स्वभाव समय,जगत की भौगोलिक सीमाओं और परिस्थितियों, सौर्यमण्डल के प्रति वैज्ञानिकों व गणितज्ञों द्वारा सुझाये गये विचारों से परे है। परमेश्वर सौर्य मण्डल के समय की चाल से बढ़कर है और वह उस असीम समय रेखा में जो सदैव आगे की ओर अग्रसर रहता है किसी समय अन्तराल को आगे या पीछे खसका सकता, और पुन: वह रूप दे सकता है जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। परमेश्वर ने मसीह में होकर सृजे गये समय और जगत में प्रवेश किया। इसी प्रकार से परमेश्वर जगत में उसके तीन आयामों से भी बढ़कर है और उसका आलौकिक स्वभाव एकता (मरकुस 12:29) व अनेकता(मत्ती 28:19) में प्रगट किया जा सकता है।

बाइबल में परमेश्वर ने अपने आपको एक ऐसे परमेश्वर के रूप में प्रगट किया है जिसके तीन अलग अलग आलौकिक व्यक्तित्व हैं। किसी दूसरे मसीही जन के द्वारा बपतिस्मा लेना निम्नलिखित बातों का चिन्ह व प्रमाण है:

- तीन आयाम वाले *इस सौर्यमण्डल के रचे जाने और कालों का समय निर्धारित किये जाने से पूर्व* परमेश्वर पिता ने विश्वासियों को अपने आत्मिक पुत्र व पुत्री के रूप में स्वीकार कर लिया है(इफिसियों 1:4-5)।
- इस सृजे गये संसार के भूतकाल में परमेश्वर पुत्र ने अपने बहुमूल्य लहू से(क्रूस की मृत्यु द्वारा) (1पतरस 1:18-19; 1 यूहन्ना 1:7) विश्वासी के सारे पापों को धो दिया है।
- *इस जगत के वर्तमान काल में,* पवित्र आत्मा विश्वासियों की नया जन्म प्राप्त करने (तीतुस 3:4-6), उसमें होकर जीवन व्यतीत करने में मदद करता ,तथा विश्वासी को शुद्ध करता और यीशु मसीह में होकर प्राप्त की गयी सारी

आशीषों का भागीदार बना देता है। विश्वासी पहले ही चुन लिया गया, नया जन्म पा चुका और धर्मी ठहराया जा चुका है। अब वह अपने जीवन और अपने चरित्र में

- अधिक पवित्र बनता है। वह अन्त में अपनी महिमा को भी प्राप्त करेगा(रोमियों 8:29-30)। नया विश्वासी चेले के रूप में स्वयं भी उन्नति करता है और दूसरों को भी यीशु मसीह का शिष्य बनाने में सहायता करता है।

2. मरकुस 16:15-16 पवित्र आत्मा से बपतिस्मे के बारे में बताता है।

(1) क्या होना चाहिए?

ग्रीक शब्द "काई" का अर्थ "और "(अतिरिक्त) या "इसका अर्थ है कि"(व्याख्या) हो सकता है।
सुसमाचार सारे जगत में सुनाया जाना चाहिए। "जो कोई यीशु मसीह पर विश्वास करता है,"इसका अर्थ है कि" जो (पवित्र आत्मा से) बपतिस्मा ले, वह उद्धार पाएगा।" लेकिन जो कोई विश्वास नहीं करता,उसने आत्मा से बपतिस्मा प्राप्त नहीं किया है,और वह दोषी ठहर चुका है। यह आयत ऐसे नहीं कहती है: "जिस किसी ने पानी का बपतिस्मा नहीं पाया है, वह दोषी ठहरेगा।"

(2) इसका क्या अर्थ है?

दूसरे विश्वासियों या मसीहियों द्वारा पानी का बपतिस्मा पाने से किसी का उद्धार नहीं हो जाता,लेकिन यीशु मसीह द्वारा पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने से जरूर होता है(मरकुस 1:8)। लोग अपने कामों के द्वारा नहीं वरन परमेश्वर के कामों के द्वारा नया जन्म पाते हैं(यूहन्ना 1:12-13;3:3-8)! विश्वासी पवित्र आत्मा के चिन्ह व प्रमाण के रूप में (दूसरे विश्वासी से)पानी का बपतिस्मा लेते हैं। ध्यान दें,हालांकि विश्वास करने वाले हत्यारे ने पानी का बपतिस्मा नहीं हुआ था, लेकिन ऐसा न होने पर भी कोई उसे उसी दिन यीशु के साथ फिरदौस में जाने से नहीं रोक पाया(लूका 23:39-43)!

3. प्रेरितों 2:37-41 और प्रेरितों 22:16 हमें पानी से बपतिस्मा लेने के बारे में बताते हैं।

(1) क्या हुआ?

पश्चाताप करने वाले यहूदियों ने (अर्थात, जिन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास करके पवित्र आत्मा पाया)दूसरे विश्वासियों के द्वारा यीशु मसीह के नाम में (वास्तव में: नाम पर)बपतिस्मा लिया। यह भाव यीशु मसीह "के नाम में (पर)पानी का बपतिस्मा"(ग्रीक भाषा में : इपी टो ओनोमाटी)[6] यह दर्शाता है कि उस विश्वासी को यीशु के नाम के अधिकार, मांग और दावे पर बपतिस्मा दिया गया है। उस विश्वासी को इसलिए बपतिस्मा दिया गया है क्योंकि उसने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया है और उद्धार के निमित्त उसके द्वारा किये गये सारे कार्यों के कारण, उसका रिश्ता मसीह से जुड़ गया है, उसने यीशु की शिक्षाओं को सुना है और वह यीशु की शिक्षाओं को स्वीकार करता और उसने यीशु के शिक्षाओं का अनुपालन करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया है।

6.ग्रीक: इपी टो ओनोमाटी,"उसके नाम पर"
7 ग्रीक : एपिकालेओमाई टू ओनोमा,"के नाम में घोषणा"

इसके अलावा पौलुस ने पश्चाताप किया (विश्वास किया और पवित्र आत्मा पाया)और पश्चाताप करने के तीन दिनों के बाद(प्रेरितों 22:16) "यीशु मसीह का नाम लेकर" पानी का बपतिस्मा लिया। (ग्रीक : एपिकालेओमाई टू ओनोमा)[7] (प्रेरितों 22:16)।

"यीशु के नाम को पुकारने का अर्थ है:

- उसके दावों को स्वीकार करना
- उसकी शिक्षाओं पर विश्वास करना
- उसके द्वारा उद्धार के निमित्त किये गये कामों पर भरोसा करना
- अपने आप को उसके सेवा करने के लिए समर्पित करना।

(प्रेरितों 9:14, 21;22:16; प्रेरितों 2:21; रोमियों 10:12-14;1 कुरिन्थियों 1:2)
बपतिस्मा देने वाला व्यक्ति नये विश्वासी को मसीह की आज्ञा के अधिकार में होकर बपतिस्मा देता है(मत्ती 28:19) और विश्वासी यीशु मसीह पर अपने विश्वास का अंगीकार करता है : और वह यीशु के नाम को पुकारता है।

(2) इसका क्या अर्थ है?

पानी में बपतिस्मा प्रना इस बात का प्रत्यक्ष चिन्ह व प्रमाण है कि उस व्यक्ति के सारे पाप धुल चुके हैं।"परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए(सामान्य भूतकाल किसी एक घटना की ओर इशारा करता है) और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।"(1 कुरिन्थियों 6:11)। " पर अब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर ने अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नाया बनाने के द्वारा हुआ । जिसने यीशु मसीह हमारे उद्धारकर्ता में होकर उदारता के साथ में पवित्र आत्मा को हम पर उण्डेला (सामान्य भूतकाल किस एक घटना की ओर इशारा करता है)है" (तीतुस 3:4-8)।

शब्द "धो दिया/धोया गया(ग्रीक: अपोलाऊमाई)(प्रेरितों 22:16; 1कुरिस्थियों 6:11) और "धो रहा है" (ग्रीक : लाऊट्रौन)(इफिसियों 5:26; तीतुस 3:5)पवित्र आत्मा के बारे में बताता है जिसे प्रत्यक्ष रूप में पानी के बपतिस्ता द्वारा प्रमाणित किया जाता है। नया विश्वासी पूरी तरह से क्षमा प्राप्त,धर्मी ठहराया गया और छुटकारा प्राप्त होता है(प्रेरितों 15:7-9, उसने पवित्र आत्मा प्राप्त किया है जिसने उसके हृदय को पूरी रीति से धो/साफ कर दिया है।

4. प्रेरितों 10:47-48 पानी के बपतिस्मा के बारे में बताता है।

लिखा है: " क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएं जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है? और उसने आज्ञा दी कि उनहें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए।"

(1) क्या हुआ?

यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले गैर यहूदियों ने दूसरे विश्वासियों द्वारा "यीशु मसीह के नाम में " बपतिस्मा दिया गया। अभिव्यक्ति "परमेश्वर के नाम में"(ग्रीक :एन टो ओनोमाटी) का अर्थ भी वही है जो मतलब " यीशु के नाम पर " का है: जैसे कि मसीह के अधिकार में ,उसमें विश्वास करने के अंगीकार में, उसके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाते हुए, और उसकी आज्ञा मानने की प्रतिज्ञा करते हुए। बपतिस्मा देने वाला मसीही जन नये विश्वासी को यीशु द्वारा दी गयी आज्ञा के अधिकार द्वारा बपतिस्मा देता है(मत्ती 28:19) और विश्वासी यीशु मसीह के नाम में अपने विश्वास का अंगीकार करता है।

(2) इसका क्या अर्थ है?

पानी का बपतिस्मा लेना विश्वासी द्वारा प्रत्यक्ष रूप में पवित्र आत्मा द्वारा प्राप्त बपतिस्में का चिन्ह व प्रमाण है। उसने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पा लिया है या वह पवित्र आत्मा में होकर नया जन्म पा चुका है(यूहन्ना 3:3-8;तीतुस 3:3-8)।

5. रोमियों 6:3-5 हमें पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के बारे में बताता है।

"क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होने मसीह यीशु का बपतिस्मा(ग्रीक: बैपटाइज़ो)(सामान्य भूतकाल निष्क्रिया) लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा(ग्रीक: बैपटाइज़ो)(सामान्य भूतकाल निष्क्रिया) लिया?अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से(ग्रीक : दिया तोऊ बपतिस्मोस) हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया (ग्रीक :ईगीरो)(सामान्य भूतकाल निष्क्रिया)गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें(ग्रीक: पेरिपाटिओ)(संभाव्य,सामान्य भूत)। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में (ग्रीक : टू होमोईयोमाटी टोउ थानाटोउ औटाऊ)उसके साथ जुट गए हैं(ग्रीक: सम्फ्यूटोस)(एक साथ बढ़े)(गिनोमाई)(सिद्ध काल), तो निश्चय (भविष्य काल) उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।

रोमियों अध्याय 6 हमें इस बात की शिक्षा प्रदान नहीं करता कि हमें किस प्रकार से पानी का बपतिस्मा देना चाहिए, वरन यह हमें बताता है जब कोई व्यक्ति पवित्र आत्मा में बपतिस्मा में लेता है तो क्या होता है! कोई भी मनुष्य किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले किसी भी काम से मसीह के साथ नहीं जुड़ सकता लेकिन परमेश्वर के कामों से निश्चय ही जुड़ जाता है(जो उसे पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देता है)!

(1) क्या होता है?

जो लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं हमेशा के लिए मसीह में होकर पवित्र आत्मा में और मसीह की मृत्यु में बपतिस्मा लेते हैं। अभिव्यक्ति " मसीह में(ग्रीक: ऐस)" और "उसकी मृत्यु में (ग्रीक: ऐस)" का अर्थ होता है : यीशु मसीह के साथ व्यक्ति सम्बन्ध में जुड़ जाना, विशेषकर उसकी मृत्यु में। सामान्य भूतकाल किसी विशेष घटना की ओर इशारा करता है। यीशु मसीह की मृत्यु स्थायी तौर पर उसके पुनरूत्थान से जुड़ी है।

(2) इसका क्या अर्थ है?

रोमियों 6:3-4 हमें सिखाते हैं कि जिस क्षण कोई व्यक्ति आत्मा में बपतिस्मा प्राप्त करता है(अपने विश्वास के आधार पर) कि वह दो हज़ार पहले हुई यीशु की मृत्यु और उसके दफन में एक हो जाता है।

और रोमियों 6:5-8 सिखाता है कि जिस क्षण कोई व्यक्ति आत्मा में बपतिस्मा प्राप्त करता है(अपने विश्वास के आधार पर) कि वह दो हज़ार पहले हुए उसके पुनरूत्थान में एक हो जाता है।

अत: जिस क्षण कोई व्यक्ति आत्मा में बपतिस्मा प्राप्त करता है(अपने विश्वास के आधार पर) कि वह दो हज़ार पहले हुई यीशु की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान में एक हो जाता है। जिसका अर्थ हुआ कि वह विश्वासी मर चुका व पुन: जीवित हो चुका है।

(3) क्या मर चुका है?

विश्वासी का पुराना स्वभाव ! क्योंकि नया विश्वासी "हमेशा के लिए मसीह की समानता में (वास्तव में)जुट गया है, अर्थात उसकी मृत्यु की समानता में,उसका पुराना स्वभाव(जिसका कभी नवीनीकरण न हुआ) पूरी तरह से मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ा दिया गया है और "उसकी पापमय देह" हमेशा के लिए व्यर्थ ठहराया (शक्तिहीन हो चुका है)जा चुका है। पाप मय

स्वभाव की शक्ति को हमेश के लिए तोड़ दिया गया है और अब मसीही विश्वासी पापमय स्वभाव से पूरी तरह स्वतन्त्र हो चुका है। हालांकि एक मसीही (अर्थात आत्मा में बपतिस्मा पाया हुआ व्यक्ति)अभी तक सिद्ध नहीं हुआ है और बार बार अलग अलग पापों में गिर जाता है, लेकिन वह पाप में बना नहीं रहता। यदि वह पाप में बना रहता या लगातार पाप में जीवन व्यतीत करता है तो वह नया जन्म पाया हुआ मसीही नहीं हो सकता(1 यूहन्ना 1:8-2:2;3:6-9। "लगाता पाप में जीवन व्यतीत करता है" यह नियमित वर्तमान काल है")।

"क्योंकि जो मर गया है वह पाप से छूट चुका है"(पद 7) यहा पर वास्तव में यह लिखा हुआ है कि"जो व्यक्ति अनन्त काल के लिए मर गया है(सामान्य भूतकाल) वह अब धर्मी ठहराकर पापों से (दासत्व की आत्मा से)स्वतन्त्र कर दिया गया है(सिद्ध काल)। यह सिद्ध काल सामने आने वाली परिस्थिति की नियमितता को प्रगट करता है। विश्वासियों को कानूनी तौर पर धार्मिक (उसे पाप के दोष और दण्ड से आज़ाद करा दिया गया है और उसे क्षमा मिल गयी है) और नैतिक तौर पर पवित्र (उसे पास की शक्ति से आज़ाद करा दिया गया है) ठहरा दिया गया है।

पुराने पापियों के सम्बन्ध में परमेश्वर की उदघोषणा का कानूनी अभिप्राय है (उसे पाप के दोष और दण्ड से आज़ाद करा दिया गया है और उसे क्षमा मिल गयी है)और नैतिक अर्थ (उसे पास की शक्ति से आज़ाद करा दिया गया है)है। वह स्वतन्त्र है और हमेशा स्वतन्त्र रहेगा। विश्वासी पूरी तरह सुनिश्चित हो सकते हैं कि उसे पूरी से उसे पापों से आज़ाद करवाकर धर्मी ठहराया जा चुका है अर्थात परमेश्वर ने मसीह की धार्मिकता को उस विश्वासी में कलम लगा दिया है। "कलम" लगाये जाने का अर्थ है कि परमेश्वर ने उसे धर्मी घोषित कर दिया है और अब वह उसके साथ एक पूरी तरह से धर्मी व्यक्ति के जैसे ही व्यवहार करता है और परमेश्वर ने उसे पाप के दासत्व की शक्ति से छुड़ाकर स्वतन्त्र कर दिया है। पद 8 में इस्तेमाल किया गया भविष्यकाल वास्तव में भविष्यकाल को नहीं वरन निश्चितता को दर्शाता है: अर्थात जो विश्वास वर्तमान में मसीह के साथ मरते हैं वे उसके साथ निश्चय ही जी उठेंगे!

मसीह पाप के लिए मरा(ताकि वह विश्वासियों के पापों को हर ले और परमेश्वर पिता से उनका मिलाप करवा दे)(पद 10, 1पतरस 2:24, 1पतरस 4:1-3;3:18)। और इसी प्रकार मसीही भी पाप के लिए मर गया (वह अब पाप में जीवन नहीं बिताना)(पद 11:12,1पतरस 4:1-3)अर्थात पाप से यह स्थायी विखण्डता ही मसीहियों की पहिचान है!

(4) किसे जिला दिया गया है?

विश्वासियों का नया स्वभाव! नये विश्वासी " मसीह के साथ वास्तव में एक पेड़ के समान बढ़े हैं (ग्रीक: सुम्फुटोस),जिसका अर्थ है कि वह विश्वासी मसीह की समानता में जुट गया है, न केवल उसकी मृत्यु में वरन उसके पुनरूत्थान में भी(रोमियों 6:5 ख)। अत: अब *नया विश्वासी अनन्त काल तक* नये जीवन की सी चाल **चल सकता है,चलेगा और निश्चित चलेगा**(रोमियों 6:4) और बाद में उसकी देह मृतकों में से जी उठेगी(रोमियों 6:5)। क्योंकि मसीही जन अनुग्रह से विश्वास के द्वारा मसीह से जुड़ गये हैं (जो अनन्त तक जीवित है)(प्रकाशितवाक्य 1:18), इसलिए नया विश्वासी लगातार पाप से लड़कर अपने पापमय स्वभाव पर विजय प्राप्त कर सकता है और निश्चित तौर पर विजय प्राप्त करेगा। पद 5 में इस्तेमाल किया गया भविष्य काल, वास्तव में भविष्य काल के बारे में नहीं वरन निश्चितता के बारे में बताता है।

(5) मृत्यु और पुनरूत्थान के बीच संयोग या अनौपचारिक रिश्ता।

यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के बीच में एक अनौपचारिक रिश्ता है(पद 5)। इसी प्रकार से मसीहियों की धार्मिकता और पवित्रता का मज़बूत समबन्ध मसीहियों की नयी जीवन शैली से जुड़ा होता है जिसके आधार पर वह धार्मिक और पवित्र जीवन व्यतीत करता है। आत्मा में बपतिस्मा पाये हुए हर एक विश्वासी को मसीह में एक नया पद और एक नयी जीवन शैली प्राप्त हुई है (प्रक्रिया)। मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान मसीह के पद और जीवन शैली को एक मज़बूत व निश्चित रूप प्रदान करता है। मसीही जन एक नयी सृष्टि है(2कुरिन्थियों 5:17) और वह एक नया (धार्मिक व पवित्र) व्यतीत कर सकता है और निश्चित तौर पर करेगा।

क्योंकि को मसीह की आत्मा में होकर बपतिस्मा प्राप्त कर चुका है, वह मसीह के पुनरूत्थान में सहभागी होने के लिए मसीह की मृत्यु और उसके गाड़े जाने की समानता में जुट गया है। यदि कोई मसीही जन अपने पुनरूत्थित जीवन की शक्ति को दूसरों के साथ साझा नहीं करता है तो वह मसीह की मृत्यु का कोई लाभ नहीं उठा सकता। एक तरफ तो एक मसीही व्यक्ति केवल तब ही पवित्र जीवन व्यतीत कर सकता है जब उसे सारे पापों को क्षमा करके उसे धर्मी ठहराया जाएं। क्योंकि बिना धर्मी ठहराये हुए कोई पवित्र जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। दूसरी तरफ, एक मसीह जन पवित्र जीवन व्यतीत करने पर ही निश्चित तौर पर यह जान सकता है कि वह धर्मी ठहराया गया है। क्योंकि जब तक कोई पवित्र जीवन न जिए वह

---

8 ग्रीक : काटारजिओ

अपने उद्धार (धर्मी ठहराये जाने)के निमित्त सुनिश्चित नहीं हो सकता! जिस प्रकार से "कामों" से "विश्वास" प्रमाणित होता है(याकूब 2:17,22) ठीक उसी प्रकार से "शुद्धिकरण" प्रमाणित करता है कि किसी को "धर्मी ठहराया" गया है(रोमियों 6:7,12-13,18-19)। "पवित्र" का अर्थ पापमय संसार से "अलग" किया जाना ताकि वह परमेश्वर के लिए "समर्पित" जीवन व्यतीत कर सके। बाइबल में मसीही जन का स्थान या पद और उसकी जीवन शैली अखण्डनीय होती है। बिना जीवन शैली के अर्थात नियमित प्रक्रिया के अपनी स्थिति या उपाधि को बनाये रखना असम्भव है! ठीक इसी प्रकार से मसीह में धार्मिकता के बिना नयी जीवन शैली भी असम्भव है। एक पेड़ अपने फलों से ही जाना जाता है(मत्ती 7:16-18)।

(6) प्रतिज्ञा और ज़िम्मेदारी।

मसीही को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को अपनाना चाहिए। उसे अपने आप को "पाप के लिए मरा हुआ", और "मसीह में होकर परमेश्वर के लिए" जीवित समझना चाहिए (रोमियों 6:11)। वह अब "व्यवस्था के अधीन नहीं", अर्थात, वह अब दोषी नहीं कि उसें पापियों के विरूद्ध परमेश्वर के धार्मिक न्याय का सामना करना पड़े(रोमियों 6:14; गलातियों 3:10-14), परन्तु अब वह "अनुग्रह के अधीन" है, अर्थात उसे परमेश्वर की कृपा से अनन्त काल तक क्षमा कर दिया गया है और वह लगातार मसीह के अनुग्रह पर निर्भर होकर जीवन व्यतीत कर सकता है। (रोमियों 6:14; यूहन्ना 1:16-17; गलातियों 4:21-31)।

मसीही व्यक्ति का ज़िम्मेदारियों के प्रति समपर्ण। एक मसीही को एक पवित्र व धार्मिक जीवन शैली के निमित्त जीवन व्यतीत करने हेतू अपना जीवन समर्पित करना चाहिए (रोमियों 6:13,19; 12:1-2)। धार्मिक स्थिति (धर्मी ठहराये जाने)का स्वीकार किया जाना और पवित्र जीवन शैली के प्रति समर्पण को मसीही शिक्षा और जीवन से बिल्कुल अलग नहीं किया जा सकता। दूसरे शब्दों में अगर कहें तो: यीशु मसीह की प्रभु जानकर आज्ञा माने बिना आप उसे अपना उद्धारकर्ता नहीं मान सकते(लूका 6:46)।

(7) आत्मा और जल में बपतिस्मा पाना।

आत्मा में बपतिस्मा लेने पर विश्वासी गण यीशु मसीह तथा उसके द्वारा उद्धार के निमित्त किये गये सारे कामों से जुड़ जाते हैं:

समय से पहले: मसीहियों को पहले से ही चुन लिया गया है।

समय पर: मसीहियों को बुलाया गया, संजीवित किया गया,धर्मी ठहराया गया, शुद्ध किया गया और महिमित किया गया है(यूहन्ना 10:28;रोमियों 8:29-30; इफिसियों 1:4; फिलिप्पियों 1:6; 2:12-13; 2थिस्लुनिकियों 2:13-14;2 तीमुथीयुस 1:9)

मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा यीशु मसीह ने मसीहियों का प्रतिनिधित्व किया है(रोमियों 5:17-19;1 कुरिन्थियों 15:22)। अब मसीही जन मसीह द्वारा उद्धार के निमित्त किये जाने वाले सम्पूर्ण कार्य के भागीदार हो सकते हैं जिससे उसके जीवन के निम्न क्षेत्र प्रभावित होते हैं:

- उसका भूतकाल : उसने नया जन्म प्राप्त किया है और उसे परमेश्वर के सम्मुख एक धार्मिक व पवित्र पहिचान हासिल हुई है(1 कुरिन्थियों 1:30)
- उसका वर्तमान : वह निरन्तर मसीह की समानता में बदलता चला जाता है, वह अधिक शुद्ध होता जाता है(रोमियों 8:13;गलातियों 5:13-26)
- और उसका भविष्य: उसका आत्मा और उसकी देह मसीह के सदृश हो जाएगी)(1यूहन्ना 3:2;फिलिप्पिों 3:21)

पानी में बपतिस्मा लेना इस बात का चिन्ह व प्रमाण है कि विश्वासी ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करके मसीह के मृत्यु और उसके पुनरूत्थान की समानता में एक हो गया है। इस रिश्ते का परिणाम हमेशा के लिए पाप से विच्छेद व नये जीवन को स्वीकार करना होता है। पानी का बपतिस्मा वास्तव में कानूनी तौर पर परमेश्वर की नज़रों में धर्मी ठहरने और नैतिक तौर पर पवित्र ठहराये जाने को चिन्ह व प्रमाण है। इसे उस विश्वासी के जीवन से अलग नहीं किया जा सकता जिसमें उसका लगातार पवित्रीकरण और भविष्य में उसकी महिमान्वन शामिल है(रोमियों 8:30; फिलिप्पियों 1:6; 2:12-13; यूहन्ना 10:28)। "महिमान्वन" का अर्थ उसकी आत्मा(1यूहन्ना 3:2) और उसकी देह में (फिलिप्पियों 3:21)मसीह की पूर्ण सदृशता।

6.1 कुरिन्थियों 12:13 आत्मा द्वारा बपतिस्मा पाने के बारे में बताता है।

क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो,क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतन्त्र एक ही आत्मा (ग्रीक: एन हेनी प्यूमाटी)के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा(ग्रीक:बैपटाइज़ो)(सामान्य भूतकाल निष्क्रिय) लिया, और हम सब को एक ही आत्मा(ग्रीक: हेन प्यूमा) पिलाया गया(ग्रीक:पोटिज़ो)(सामान्य निष्क्रिय भूतकाल निष्क्रिय)।

(1) क्या होता है ?

जितने लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं हमेशा के लिए एक ही आत्मा द्वारा एक देह होने के लिए (ग्रीक: ऐस)बपतिस्मा पाते हैं। अभिव्यक्ति "एक ही आत्मा" का अर्थ है कि पवित्र आत्मा सभी सच्चे मसीहियों के ऊपर उतर आया है, वह उन पर उण्डेला गया है और अब वह उन में वास करता है। अभिव्यक्ति "एक देह में होने के लिए" का अर्थ है कि सारे सच्चे मसीही एक विश्वव्यापी मसीह की देह के अंग है (किसी अलग संगठन के भाग नहीं)। उन सभी को एक ही आत्मा में से पीने के लिए दिया गया है। इसका अर्थ है कि मसीह की देह में सभी एक ही आत्मा भरा (अर्थात वास करता तथा नियन्त्रण करता है)गया है।

(2) इसका क्या अर्थ है ?

आत्मा में बपतिस्मा पाने से संसार के सारे विश्वासी यीशु मसीह(सिर) में और आपस में एक दूसरे के साथ(देह के अंग के रूप में) जुड़ जाते हैं। अब मसीही लोग मसीह के जीवन और मसीह की देह के जीवन को उस पवित्र आत्मा के द्वारा आपस में साझा करते हैं,जो उनमें वास करता है (1कुरिन्थियों 3:16;इफिसियों 2:22)। मसीही लोग कभी भी अपने आपको मसीह(पवित्र आत्मा) या मसीही की देह(कलीसिया,स्थानीय कलीसिया या अन्य विश्वासियों) से अलग (विच्छेदित)हुआ महसूस नहीं कर सकते।

बाइबल के अनुसार सच्चे मसीहियों के बीच में साम्प्रदायिकता,विशिष्टता और पूरी तरह से आत्मनिर्भरता के लिए कोई स्थान नहीं होता! इसके अलावा मसीह की देह में दलों व अलग अलग डिनोमिनेशन्स का भी कोई स्थान नहीं होता(1 कुरिन्थियों 3:3-4)! "आत्मा में एकता बनाये रखने का हर एक भरसक प्रयास करो। यही यीशु मसीह की शिक्षा और प्रार्थना है"(इफिसियों 4:3;यूहन्ना 17:21-23)!

7. गलातियों 3:26-29 आत्मा में बपतिस्मा के बारे में बताता है।

"क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है,परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा(ग्रीक: बैपटाइज़ो)(सामान्य निष्क्रिय भूतकाल)लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया(ग्रीक: इण्डुओमाई) है। अब न कोई यहूदी रहा औरन यूनानी, न कोई दास न स्वतन्त्र, न कोई नर न नारी क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।

(1) क्या होता है?

जो लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं उन्होंने एक ही बार सदा के लिए आत्मा के द्वारा मसीह में (ग्रीक : ऐस)बपतिस्मा ले लिया है। शब्द "में"(ग्रीक:ऐस) का अर्थ है कि उनका यीशु मसीह के साथ ज़रूरी रिश्ता कायम हो गया है।

(2) इसका क्या अर्थ है?

आत्मा में बपतिस्मा पाने के द्वारा सारे देशों के मसीही मसीह और आपस में एक साथ जुड़ जाते हैं। सारे सच्चें मसीहियों ने मसीह को पहिन लिया है। उन सभी लोगों ने हमेशा के लिए नये मनुष्यत्व को धारण कर लिया है, जिसे सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में होकर परमेश्वर के समान बनने के लिए रचा गया था (इफिसियों 4:24)। हर एक गोत्र और भाषा, और जाति के लोग अब अब्राहम की सन्तान और उन प्रतिज्ञाओं के वारिस है जिन्हें परमेश्वर ने अब्राहम व अपनी सन्तानों से की थी। वे अब परमेश्वर द्वारा बान्धी गयी वाचा के लोग(पुराने नियम और नये नियम के) और उन सारी प्रतिज्ञाओं के भागीदार हैं जो बिते काल में परमेश्वर ने अपने लोगों से की थी(2 कुरिन्थियों 1:20)।

8.कुलुस्सियों 2:11-13 हमें पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के बारे में बताता है।

उसी में तुम्हारा ऐसा खतना(ग्रीक: पेरीटिमनों)(सामान्य निष्क्रिय भूतकाल) हुआ है जो होथ से नहीं होता, अर्थात मसीह का खतना जिससे शारीरिक देह उतार दी जाती है(ग्रीक : अपिकिदुसिस) और उसी के साथ बपतिस्मा(ग्रीक: बैपटाईज़ो) में गाड़े गए(ग्रीक: सुन्थाप्तो) (सामान्य निष्क्रिय भूतकाल) और उसी में परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करके जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ(ग्रीक : सूज़ापोइयों) जी उठे।

(1) क्या हुआ?

यहां पर दो चिन्ह हैं: खतना और बपतिस्मा। दोनों ही पुराने मनुष्यत्व की मृत्यु और नये जीवन के पुनरूत्थान के प्रतीक हैं। पहला चिन्ह पुराने नियम का खतना है: जितने लोग मसीह में विश्वास करते हैं उनका मसीह में आत्मिक खतना हो चुका है (जो कि उसकी क्रूस की मृत्यु को दर्शाता है)। इसके द्वारा उनका उनका पुराना पापमय मनुष्यत्व उतार दिया गया है।आत्मा के द्वारा मसीह लोगों के हृदयों का खतना करता है(रोमियों 2:28:29)। आत्मिक खतना पुनारे मनुष्य की मृत्यु पर ज़ोर डालता है।

दूसरा चिन्ह नये नियम का बपतिस्मा है: जितने लोग मसीह यीशु पर विश्वास करते हैं वे सदा के लिए आत्मिक तौर पर बपतिस्मा में अपने विश्वास के कारण (अर्थात, परमेश्वर पर उनके विश्वास में, जिसने मसीह को भी मृतकों में से जीवित

कर दिया है)गाढ़े गये और पुन: जी उठे(दफन हुए और उनका पुनरूत्थान हुआ) हैं। आत्मा में बपतिस्मा का चिन्ह नया जन्म पाये नये विश्वासी के पुनरूत्थान पर ज़ोर डालता है।

(2) इसका अर्थ क्या है?

आत्मा में बपतिस्मा(नया जन्म)सारे विश्वासियों को दो हजार वर्ष पहले हुई यीशु मसीह की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान से जोड़ देता है। इसलिए उनका पुराना पापमय स्वभाव जिसकी वजह से उनके मनपरिवर्तन से पूर्व उनकी आत्मिक मृत्यु हो गयी थी(इफिसियों 2:1-3), उनसे दूर करके उनके पापों को धो दिया गया है(प्रेरितों 22:16),अर्थात उनके सारे पापों को क्षमा कर दिया गया है। और जिसकी वजह से उन्हें नया जन्म (नया जीवन या आसमानी जीवन) प्राप्त हुआ है अर्थात वह स्वभाव जो पूरी तरह से पवित्र आत्मा द्वारा नियन्त्रित है और उन्हें पूरी तरह से हर क्षेत्र में नया बनाता है।

जिस प्रकार से यीशु मसीह की मृत्यु को उसके पुनरूत्थान से अलग करके नहीं देखा जा सकता ठीक उसी प्रकार पुराने स्वभाव को जिसका नवीनीकरण नहीं हुआ है (अर्थात आत्मा के द्वारा हृदय का खतना करने के भाव से) नये जन्म से प्राप्त स्वभाव से अलग करके नहीं देखा जा सकता (पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के द्वारा)।

मसीही पानी का बपतिस्मा एक ओर तो अप्रत्यक्ष आत्मिक खतने (अर्थात हृदय का खतना जो पुराने स्वभाव की मृत्यु को दर्शाता है)का प्रत्यक्ष प्रमाण व मुहर है और दूसरी तरफ अप्रत्यक्ष आत्मिक बपतिस्मे(अर्थात पवित्र आत्मा में बपतिस्में का जो नये स्वभाव के पुनरूत्थान को दर्शाता है)। दोनों ही काम अर्थात पुराने स्वभाव की मृत्यु और नये स्वभाव का पुनरूत्थान पवित्र आत्मा के काम है (रोमियों 2:29)। पवित्र आत्मा को अप्रत्यक्ष बपतिस्मा प्रत्यक्ष पानी के बपतिस्में में प्रगट होता है(मरकुस 1:8; प्रेरितों 10:47-48)।

9.इफिसियों 4:5 पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के बारे में बताता है।

जिस तरह से केवल एक ही आत्मा, और सारे विश्वासियों के लिए एक ही परमेश्वर और एक ही पिता है, उसी प्रकार से केवल एक ही देह, एक ही विश्वास और एक बपतिस्मा है (ग्रीक: हेन बपतिस्मा)। यह बपतिस्मा यीशु मसीह द्वारा दिया जाने वाला आत्मा का बपतिस्मा है क्योंकि मनुष्य द्वारा दिया जाने वाला पानी का बपतिस्मा कभी विश्वासी के रिश्ते को त्रीएक परमेश्वर या मसीह की देह के साथ नहीं जोड़ सकता है।

10.मसीही बपतिस्में के सन्दर्भ में निष्कर्ष।

(1) पवित्र आत्मा द्वारा दिये जाने वाले बपतिस्में का अर्थ।

मसीही बपतिस्मा सब बातों से बढ़कर आत्मा के द्वारा दिया जाने वाला बपतिस्मा है।

लेकिन यह पानी द्वारा दिया जाने वाला बपतिस्मा भी है। (मरकुस 1:8)।

पानी का बपतिस्मा पवित्र आत्मा के अप्रत्यक्ष बपतिस्में का प्रत्यक्ष प्रमाण हे। (प्रेरितों के काम 10:47-48)।

बपतिस्में के द्वारा बपतिस्मा प्राप्त करने वाला व्यक्ति अब त्रीएक परमेश्वर तथा मसीह की देह के साथ भागीदार हो जाता है और अब मसीह के द्वारा उद्धार के निमित्त किये गये कामों में सहभागी हो जाता है जिसका उसके भूतकाल(नये जन्म, धर्मी ठहराये जाने) वर्तमान (पवित्रता और शुद्धता) और भविष्य (महिमा पाने)पर प्रभाव पड़ता है।

बाइबल एक ही बपतिस्मे के बारे में बात करती है(इफिसियों 4:5; 1कुरिन्थियों 12:13)। इस बपतिस्में को केवल पवित्र आत्मा के बपतिस्में से ही जोड़कर देखा जा सकता था, जिसके बिना कोई भी जन मसीह के साथ (रोमियो 6:3-7;गलातियों 3:27;कुलुस्सियों 2:10-12) या मसीह की देह(कलीसिया,1 कुरिन्थियों 12:12-13) नहीं जुड़ सकता और जिसके बिना कोई भी जन नया जन्म (यूहन्ना 3:3-8),पवित्रता(रोमियों 9:13; 2थिस्लुनिकियों 2:13; 1पतरस 1:2) या महिमा (2 कुरिन्थियों3:18; 1 कुरिन्थियों 15:42-49)।

आत्मा से जन्म लेने से मसीह व उसके द्वारा उद्धार के निमित्त पूरा किये गये कामों में भागीदार बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है: गलातियों 3:27 में लिखा है: "और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। पवित्र आत्मा में बपतिस्मा प्राप्त करने के द्वारा विश्वासी पूरी तरह मसीह के साथ बन्धन में बन्ध जाता है (गलातियों 3:27)। अत: मसीह सारे मसीहियों का प्रतिनिधी बन गया है(रोमियों 5:12,17-19. 1 कुरिन्थियों 15:22)। इस तरीके से सारे मसीही जन यीशु मसीह के उद्धार के निमित्त किये गये कार्यों के भागीदार हो जाते हैं, जिसका असर मसीह में उनकी स्थिति या पद, संसार में उनकी वर्तमान जीवन शैली और भविष्य में उनकी मंजिल पर पड़ता है (रोमियों 6:3,5)।

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने से आपके भूतकाल पर एक प्रभाव डालता है।

- अब आप नया जन्म पा चुके हैं(कुलुस्सियों 2:11-12; तीतुस 3:4-8)। अब आप एक नई सृष्टि हैं(2 कुरिन्थियों 5:17)। अब आपको आत्मिक तौर से पुन: जीवित कर दिया गया है(इफिसियों 2:5)।
- अब आप धर्मी ठहराये जा चुके हैं:अब आपके सारे पापों को धो दिया गया है। अब आपको पूरी तरह क्षमा कर दिया गया है(प्रेरितों 2:37-41; 22:16)
- अब आप मसीह की सिद्ध पवित्रता और धार्मिकता के भागीदार है(1 कुरिन्थियों 1:30; इफिसियों 4:24)

- अब आप मसीह से अलग नहीं रहे (इफिसियों 2:12),वरन अब आप मसीह में(2 कुरिन्थ्यिों 5:17) और मसीह तुम में वास करता है(कुलुस्सियों 1:27)।
- अब आप परमेश्वर की निज प्रजा में जुड़ गये हो अर्थात जिनसे उसने वाचा बांधी है(गलातियों 3:26-29;1पतरस 2:9-10)
- आपको पहले ही अन्धकार के राज्य से निकालकर मसीह के राज्य में प्रवेश करवाया गया है(कुलुस्सियों 1:13)। अब आप स्वर्ग के राज्य के नागरिक हो(फिलिप्पियों 3:20)।
- अब आप मसीह की देह के अंग हो: अर्थात कलीसिया हो। (1 कुरिन्थियों 12:12-13)।

आत्मा से जन्म लेना आपके वर्तमान पर प्रभाव डालता है।

- आप मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए जा चुके हैं(गलातियों 2:20)। आप संसार और संसार आपके लिए मर चुका है(गलातियों 6:14)। आप अपने पुराने मनुष्यत्व को मरा जानकर नये मनुष्यत्व के अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं। इससे आपके जीवन में रोज बदलाव व नवीनीकरण होता है।
- मसीह को अपने हृदय के सिंहासन पर बैठाकर आप पवित्र जीवन जी सकते हैं और जिएंगे(रोमियों 6:1-14)। आप मसीह में दृढ़ता के नये स्तर तक बढ़ते हैं।
- आप मसीह के वृद्धि या उन्नति करने वाले चेले हैं। आप पविपक्व मसीही बनने के लिए उससे लगातार सीखते रहते हैं(मत्ती 28:19)।
- आप सारे संसार में परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाने तथा विश्वव्यापी कलीसिया और स्थानीय कलीसियाएं स्थापित करने के दर्शन का एक भाग बन जाते हैं(1कुरिन्थियों 12:12-13)।

आत्मा से जन्म लेना आपके भविष्य पर प्रभाव डालता है।

- अब आप हमेशा मसीह के साथ जुड़े रहना चाहते हैं(फिलिप्पियां 1:23)
- आपकी आत्मा मसीह की समानता में एक सिद्ध मानवीय स्वभाव में ढल जाएगी।(1यूहन्ना 3:2)।
- आपकी आत्मा मसीह की समानता में एक सिद्ध मानवीय स्वभाव में ढल जाएगी।(फिलिप्पियों 3:21)।
- आप मसीह व पुराने नियम तथा नयी धरती पर पाये जाने वाले वाचा के लोगों के साथ जीवन व्यतीत करेगें।(प्रकाशितवाक्य 21:1-5,9-14)।
- आप मसीह के चेहरे में परमेश्वर का दर्शन पाएंगे(प्रकाशितवाक्य 22:4)।

(2) पानी में बपतिस्मा पाने का अर्थ।

पानी में बपतिस्मा पाना पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने का प्रत्यक्ष प्रमाण व मुहर है(मरकुस 1:8; प्रेरितों 10:47-48)।
यह पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने का प्रतीक और प्रमाण है कि आपने वास्तव में आपने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लिया है।

(3) पानी का बपतिस्मा लेने का उद्देश्य ।

पानी से बपतिस्मा लेने के द्वारा परमेश्वर उस विश्वासी का साक्षी बन जाता है(मत्ती 28:19)।
पानी के बपतिस्मा के द्वारा मसीह में होकर और बपतिस्मा देने वाले के माध्यम से परमेश्वर नये विश्वासी के प्रति साक्षी देत हैं! बपतिस्मा देने वाला कहता है :" मैं तुम्हें पिता,पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा देता हूँ।" अन्य विश्वासियों व लोगों के बीच में परमेश्वर एक प्रत्यक्ष चिन्ह प्रदान करता है जो चिन्ह होने के साथ साथ प्रमाण भी होता है। बपतिस्मा किसी चीज़ का प्रतीक है और उसी चीज़ को प्रमाणित भी करता है।
पानी का बपतिस्मा केवल कोई धार्मिक अनुष्ठान या मसीह या कलीसिया के साथ एक हो जाने का प्रतीक नहीं है वरन पानी का बपतिस्मा दर्शाता है कि पवित्र आत्मा में बपतिस्मा दिये जाने का कार्य वास्तव में हो चुका है।

- आत्मा द्वारा बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद एक नया विश्वासी
- मसीह की मृत्यु और उसके जी उठने में भागी हो जाता है।
- मसीह की देह अर्थात कलीसिया का एक भागी हो जाता है।
- और उद्धार के निमित्त किये गये मसीह के सारे सम्पूर्ण कार्यों का भागी हो जाता है।

पानी का बपतिस्मा एक प्रतिकात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा परमेश्वर नये विश्वासी को एक प्रत्यक्ष चिन्ह व प्रमाण प्रदान करते हैं जिसका अपना अभिप्राय व सुनिश्चय होता है

- कि वह आत्मा में बपतिस्मा पा चुका है(अर्थात उस व्यक्ति ने वास्तव में पवित्र आत्मा प्राप्त कर लिया है)
- वह त्रीएक परमेश्वर के साथ एक हो गया है।
- कि बीते समय,वर्तमान और भविष्यकाल के उसके सारे पाप क्षमा किये जा चुके हैं(अर्थात वह धर्मी ठहराया जा चुका या उद्धार प्राप्त कर चुका है।
- इसके अलावा वह मसीह की देह का भाग हो चुका है(अर्थात परमेश्वर के राज्य तथा परमेश्वर की निज प्रजा का)

ध्यान दें कि बाइबल में पानी का बपतिस्मा पाने के लिए किसी स्थानीय मण्डली या संगठन की सदस्यता के बारे में कोई ज़िक्र नहीं किया गया है!

पानी का बपतिस्मा लेते समय एक विश्वासी परमेश्वर तथा अन्य लोगों को गवाही प्रदान करता है।(प्रेरितों 2:38;22:16)।

पानी का बपतिस्मा लेते समय एक विश्वासी परमेश्वर तथा उस समय उपस्थित लोगों के सामने अपनी गवाही को भी पेश करता है। वह विश्वासी "परमेश्वर के नाम को पुकारता है"(प्रेरितों 22:16) वह प्रार्थना या एक गीत के माध्यम से यीशु मसीह तथा परमेश्वर के वचनों में पाये जाने वाले प्रकाशन का अंगीकार करता है और घोषणा करता है कि वह अपने दैनिक व्यवहारिक जीवन में परमेश्वर के वचनों का पालन करेगा।

पानी का बपतिस्मा पवित्र आत्मा के बपतिस्में को कार्यान्वित करने का माध्यम नहीं है और न ही ऐसा करने के कारण पवित्र आत्मा प्राप्त होता है। यह पापों को धोने का एक तरीका भी नहीं है।

पानी का बपतिस्मा किसी भी व्यक्ति को अच्छे काम करने के लिए परमेश्वर का अनुग्रह प्रदान नहीं करता,जिसके द्वारा उसका उद्धार हो सके। पानी के बपतिस्में से आत्मा के द्वारा नया जन्म भी प्राप्त नहीं होता है। पानी का बपतिस्मा कोई जादुई अनुष्ठान नहीं है।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रिया]* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।*** या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	*[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण :** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. "मसीही बपतिस्मा" पर -किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। गलातियों 1-4** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. **याद करें। नयी पांच आयतों को याद करें व दोहराएं। (2) समान जीवन लक्ष्यः आमोस 3:3।** रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
5. **बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 5 के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें।** पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7- मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।